Shreemad Bhagawad Geeta: श्रीमद् - भगवद् - गीता

अथ संन्यासयोगो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥

अर्जुन उवाच ।

संन्यासम् कर्मणाम् कृष्ण पुनः योगम् च शंससि ।

यत् श्रेयः एतयोः एकम् तत् मे ब्रूहि सुनिश्चितम् ॥ ५ - १॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
संन्यासम्	Sannyasam	renunciation	संन्यास की	संन्यासाची
कर्मणाम्	KarmaNaam	of actions	कर्मों के	कर्मांच्या
कृष्ण	Krishna	O Krishna!	हे कृष्ण !	हे कृष्णा !
पुनः	PunaH	again	फिर	त्यानंतर
योगम्	Yogam	Yoga	कर्मयोग की	कर्मयोगाची
च	Cha	and	और	तसेच
शंससि	Shamsasi	you praise	प्रशंसा करते हो (इसलिये)	प्रशंसा करतोस (म्हणून)
यत्	Yat	which	जो	जे
श्रेयः	ShreyaH	better	कल्याणकारक	कल्याणकारक
एतयोः	EtayoH	of these two	इन दोनों में से	या दोन्हीपैकी
एकम्	Ekam	one	एक	एक
तत्	Tat	that	उस को	ते
मे	Me	of me	मेरे लिये	माझ्यासाठी
ब्रूहि	Bruhi	tell	कहिये	सांग
सुनिश्चितम्	Su-Nishchitam	conclusively	भलीभाँति निश्चित	निश्चितपणे

अन्वय :-

अर्जुन उवाच - हे कृष्ण ! कर्मणाम् संन्यासम् , पुनः योगम् च शंससि , एतयोः यत् एकम् श्रेयः , तत् मे सुनिश्चितम् ब्रूहि ॥ ५ - १॥

English translation:-

Arjuna said, "O Krishna! You praise renunciation of action (Sanyasa) and again path of action (Yoga). Please tell me conclusively, which is better (for me) between these two."

हिन्दी अनुवाद :-

अर्जुन ने कहा , " हे कृष्ण ! आप कर्मों के संन्यास की और फिर कर्मयोग की प्रशंसा करते हैं । (इसलिये) इन दोनों में से जो एक , मेरे लिये भलीभाँति निश्चित कल्याणकारक साधन हो , उसे कहिये ।"

मराठी भाषान्तर :-

अर्जुन म्हणाला, " हे कृष्णा, कर्मसंन्यासाची व पुन्हा कर्मयोगाची तू प्रशंसा करतोस, तेव्हा या दोन्हीपैकी जे अधिक कल्याणकारक असेल ते मला निश्चितपणे सांग ."

विनोबांची गीताई :-

कृष्णा संन्यास कर्मांचा तसा योग हि सांगसी

दोहोंत ज़ें बरें एक सांग तें मज़ निश्चित ॥ ५ - १॥

श्री भगवान् उवाच ।

संन्यासः कर्मयोगः च निःश्रेयसकरौ उभौ ।

तयोः तु कर्मसंन्यासात् कर्मयोगः विशिष्यते ॥ ५ - २॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
संन्यासः	SannyasaH	renunciation	कर्मसंन्यास	कर्मसंन्यास
कर्मयोगः	KarmayogaH	performance of action	कर्मयोग	कर्मयोग
च	Cha	and	और	आणि
निःश्रेयसकरौ	NiHshreyasa-Karau	leading to the highest bliss	परम कल्याण करनेवाले हैं	परम कल्याणकारी (आहेत)
उभौ	Ubhau	both	दोनों (ही)	हे दोन्हीही
तयोः	TayoH	of these two	उन दोनों में (भी)	त्या दोन्हीपैकी
तु	Tu	indeed	परंतु	परंतु
कर्मसंन्यासात्	Karma-Sannyasaat	than renunciation of action	कर्मसंन्यास से	कर्मसंन्यासापेक्षा
कर्मयोगः	KarmayogaH	performance of action	कर्मयोग (साधन में सुगम होने से)	कर्मयोग (हा साधण्यास अधिक सोपा असल्यामुळे)
विशिष्यते	VishiShyate	is superior	श्रेष्ठ है	श्रेष्ठ आहे

अन्वय :-

श्री भगवान् उवाच - संन्यासः कर्मयोगः च उभौ निःश्रेयसकरौ ; तयोः तु कर्मसंन्यासात् कर्मयोगः विशिष्यते ॥ ५ - २॥

English translation:-

The Blessed Lord said, "Renunciation of action and performance of action, both lead to the Supreme bliss. However, of these two, performance of action is superior to renunciation of action (as it is path of least resistance and difficulties as well as easier to practise for you Arjuna)."

हिन्दी अनुवाद :-

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा , " कर्मसंन्यास और कर्मयोग ये दोनों ही परम कल्याण करनेवाले हैं ; परन्तु उन दोनों में भी , कर्मसंन्यास से कर्मयोग , साधन में सुगम होने से श्रेष्ठ है ।"

मराठी भाषान्तर :-

भगवान श्रीकृष्ण म्हणाले , " कर्मसंन्यास व कर्मयोग हे दोन्ही कल्याणकारक आहेत ; पण त्या दोन्हीपैकी , तुझ्यासाठी कर्मसंन्यासापेक्षा कर्मयोग हा विशेष श्रेष्ठ आहे ."

विनोबांची गीताई :-

योग संन्यास हे दोन्ही मोक्ष साधक सारखे

विषेश चि परी योग संन्यासाहूनि मानिला ॥ ५ - २ ॥

ज्ञेयः सः नित्यसंन्यासी यः न द्वेष्टि न काङ्क्षति ।

निर्द्वन्द्वः हि महाबाहो सुखम् बन्धात् प्रमुच्यते ॥ ५ - ३॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ज्ञेयः	DnyeyaH	should be known	समझने योग्य (है)	समजण्यास योग्य (आहे)
सः	SaH	he	वह (कर्मयोगी)	तो (कर्मयोगी)
नित्य-संन्यासी	Nitya-Sannyasi	steady ascetic	सदा संन्यासी (ही)	सदा संन्यासी (च)
यः	YaH	who	जो (पुरुष)	जो (पुरुष)
न	Na	not	नही	नाही
द्वेष्टि	DveShTi	hates	द्वेष करता है	द्वेष करतो
न	Na	not	नही	नाही
काङ्क्षति	Kankshati	desires	आकांक्षा करता है	आकांक्षा करतो
निर्द्वन्द्वः	Nir-dvandvaH	one free from pairs of opposites	प्यार - द्वेषादि द्वन्द्वों से रहित (पुरुष)	प्रेम आणि द्वेष इत्यादि द्वन्द्वरहित (असा तो पुरुष)
हि	Hi	indeed	क्योंकि	कारण
महाबाहो	Mahaabaaho	O mighty armed!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
सुखम्	Sukham	easily	सुखपूर्वक	सुखाने
बन्धात्	Bandhaat	from bondage	संसारबन्धन से	संसारबंधनातून
प्रमुच्यते	Pramuchyate	is set free	मुक्त हो जाता है	मुक्त होतो

अन्वय :-

यः न द्वेष्टि, न (च) काङ्क्षति, सः नित्यसंन्यासी ज्ञेयः; हे महाबाहो ! हि निर्द्वन्द्वः बन्धात् सुखम् प्रमुच्यते ॥ ५-३॥

English translation:-

O mighty armed! He should be known as perpetual ascetic who neither hates nor desires, who is free from the pair of opposites; (and therefore) he is indeed easily liberated from bondage (of cycle of life and death arising out of his own actions).

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! जो पुरुष न किसी से द्वेष करता है और न किसी की आकांक्षा करता है वह कर्मयोगी सदा संन्यासी ही समझने योग्य है क्योंकि राग - द्वेषादि द्वन्द्वों से रहित पुरुष सुखपूर्वक संसारबन्धन से मुक्त हो जाता है।

मराठी भाषान्तर :-

जो मनुष्य कोणाचाही द्वेष व कशाच्याही प्राप्तीची इच्छा करीत नाही तो नित्य-संन्यासी समजावा; कारण हे पराक्रमी अर्जुना, (रागद्वेषादि) द्वंद्वविरहित पुरुष संसारबंधनातून सहज मुक्त होतो.

विनोबांची गीताई :-

तो जाण नित्य संन्यासी राग - द्वेष नसे जया
ज़ो द्वंदावेगळा झाला सुखें बंधांतुनी सुटे ॥ ५-३॥

सांख्ययोगौ पृथक् बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः ।

एकम् अपि आस्थितः सम्यक् उभयोः विन्दते फलम् ॥ ५ - ४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सांख्ययोगौ	Saankhya-Yogau	Sankhya (knowledge) and Yoga (performance of action)	संन्यासयोग और कर्मयोग को	संन्यासयोग व कर्मयोग हे
पृथक्	Pruthak	different	अलग अलग (फल देनेवाले)	वेग-वेगळे
बालाः	BalaaH	children / stupids	मूर्ख / अज्ञानी लोग	मूर्ख / अज्ञानी लोक
प्रवदन्ति	Pravadanti	Speak	कहते हैं	म्हणतात
न	Na	Not	नही	नाही
पण्डिताः	PanditaaH	Wise	ज्ञानी (पुरुष)	ज्ञानी (पुरुष)
एकम्	Ekam	One	एक में	एका
अपि	Api	Even	भी	मध्येही
आस्थितः	AasthitaH	established	स्थित (पुरुष)	स्थित (पुरुष)
सम्यक्	Samyak	truly	योग्य प्रकार से	योग्य प्रकाराने
उभयोः	UbhayoH	of both	दोनों के	दोन्हीचे
विन्दते	Vindate	obtains	परमात्मा को प्राप्त होता है	प्राप्त होते
फलम्	Phalam	fruit	फलरुप	फळ

अन्वय :- सांख्ययोगौ पृथक् (इति) बालाः प्रवदन्ति , न पण्डिताः । एकम् अपि सम्यक् आस्थितः (पुरुषः) उभयोः फलम् विन्दते ॥ ५ - ४ ॥

English translation:-

Children i.e. the ignorant and not the wise ones speak of knowledge and performance of action as different paths. He, who is truly established in one out of these two paths, obtains the fruit of both.

हिन्दी अनुवाद :-

उपर्युक्त संन्यासयोग (सांख्ययोग) और कर्मयोग को मूर्खलोग , अलग - अलग फल देनेवाले कहते हैं न कि पण्डितजन ; क्योंकि दोनों में से किसी एक मार्ग में भी योग्य प्रकार से स्थित पुरुष , एक ही फल को प्राप्त होता है अर्थात् परमात्मा को प्राप्त होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

अज्ञानी लोक सांख्ययोग आणि कर्मयोग वेगळे आहेत असे म्हणतात, पण ज्ञानी लोक तसे मानीत नाहीत ; कारण कोणत्याही एका मार्गाचे उत्तम प्रकारे पालन केल्यास दोन्ही मार्गाचे फळ प्राप्त होते .

विनोबांची गीताई :-

म्हणती सांख्य योगांतें भिन्न मूढ न जाणते
बाणो एक हि ती निष्ठा दोहींचें फळ देतसे ॥ ५ - ४ ॥

यत् सांख्यैः प्राप्यते स्थानम् तत् योगैः अपि गम्यते ।

एकम् सांख्यम् च योगम् च यः पश्यति सः पश्यति ॥ ५ - ५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यत्	Yat	that	जो	जे
सांख्यैः	SaankhyaiH	by the Samkhyas	ज्ञानयोगियों द्वारा	ज्ञानयोग्यांना
प्राप्यते	Praapyate	is reached	प्राप्त किया जाता है	प्राप्त होते
स्थानम्	Sthaanam	place	परमधाम	स्थान (परमधाम)
तत्	Tat	that	वही	तेच
योगैः	YogaiH	by Yogis	कर्मयोगियों द्वारा	कर्मयोग्यांना
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
गम्यते	Gamyate	is reached	प्राप्त किया जाता है	प्राप्त होते
एकम्	Ekam	one	एक	एक
सांख्यम्	Saankhyam	knowledge	ज्ञानयोग	ज्ञानयोग
च	Cha	and	और	आणि
योगम्	Yogam	performance of action	कर्मयोग को (फलरुप में)	कर्मयोग (हे फळरुपाने)
च	Cha	and	और	आणि
यः	YaH	who	जो पुरुष	जो पुरुष
पश्यति	Pashyati	sees	देखता है	पाहतो
सः	SaH	he	वही	तोच
पश्यति	Pashyati	sees (truely)	(यथार्थ) देखता है	(यथार्थ) पाहतो

अन्वय :-

यत् स्थानम् सांख्यैः प्राप्यते, तत् योगैः अपि गम्यते; यः सांख्यम् च योगम् च एकम् पश्यति, सः (एव) पश्यति ॥ ५-५ ॥

English translation:-

The (supreme) state reached by the knowledge seekers is also reached by the action performers. He, who understands that quest of knowledge and performance of action as one and the same, he truly understands.

हिन्दी अनुवाद :-

ज्ञानयोगियों द्वारा जो परमधाम प्राप्त किया जाता है कर्मयोगियों द्वारा भी वही प्राप्त किया जाता है। इसलिये जो पुरुष ज्ञानयोग और कर्मयोग को फलस्वरुप में एक ही देखता है वही यथार्थ देखता है।

मराठी भाषान्तर :-

सर्व कर्मसंन्यासी पुरुषांना जे मोक्षरुपी फळ प्राप्त होते तेच निष्काम कर्मयोग्यांनाही प्राप्त होते; म्हणून जो पुरुष ज्ञानयोग आणि निष्कामकर्मयोग फलरूपाने एकच पाहतो तोच दोन्हीही मार्गांचे खरे स्वरुप यथार्थपणे जाणतो.

विनोबांची गीताई :-

सांख्यांस ज़ें मिळे स्थान तें योग्यांस हि लाभतें
एक रुप चि हे दोन्ही ज़ो पाहे तो चि पाहतो ॥ ५-५ ॥

संन्यासः तु महाबाहो दुःखम् आप्तुम् अयोगतः ।

योगयुक्तः मुनिः ब्रह्म नचिरेण अधिगच्छति ॥ ५ - ६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
संन्यासः	SannyasaH	renunciation	संन्यास	संन्यास
तु	Tu	but	परंतु	परंतु
महाबाहो	Mahabaho	O mighty armed!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
दुःखम्	DuHkham	hard	कठिन (है)	कठीण (आहे)
आप्तुम्	Aaptum	to attain	प्राप्त होना	प्राप्त होणे
अयोगतः	AyogataH	without Yoga	कर्मयोगके बिना	कर्मयोगाशिवाय
योगयुक्तः	YogayuktaH	established in Yoga	कर्मयोगी	कर्मयोगी
मुनिः	MuniH	sage	भगवत्स्वरुपको मनन करनेवाला	भगवत्स्वरुपाचे चिंतन करणारा
ब्रह्म	Brahma	Brahman	परब्रह्म परमात्माको	परब्रह्म परमात्म्याला
नचिरेण	NachireNa	quickly	शीघ्र ही	लवकरच
अधिगच्छति	Adhi-gachchhati	goes	प्राप्त हो जाता है	प्राप्त होतो

अन्वय :- हे महाबाहो ! अयोगतः संन्यासः तु दुःखम् आप्तुम् , योगयुक्तः मुनिः न चिरेण ब्रह्म अधिगच्छति ॥ ५ - ६॥

English translation:-

O mighty armed, but renunciation is hard to attain without performance of action. A sage well harmonized in meditation and purified by performance of action, quickly attains Brahmapada i.e. the state of Brahman.

हिन्दी अनुवाद :-

परन्तु हे अर्जुन ! कर्मयोग के बिना संन्यास अर्थात् मन , इन्द्रिय और शरीरद्वारा होनेवाले सम्पूर्ण कर्मों में कर्तापन का त्याग करना कठिन है और भगवत्स्वरुप को मनन करनेवाला कर्मयोगी परब्रह्म परमात्मा को शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे पराक्रमी अर्जुना, कर्मयोगावाचून संन्यास प्राप्त करून घेणे फार कठीण आहे . परंतु चिन्तनशील , निष्काम कर्मयोगी मात्र लवकरच ब्रह्माला प्राप्त होतो म्हणजेच मुक्त होतो .

विनोबांची गीताई :-

योगावांचूनि संन्यास कधीं साधे चि ना सुखें
संयमी योग ज़ोडूनि ब्रह्म शीघ्र चि गांठतो ॥ ५ - ६॥

योगयुक्तः विशुध्दात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः ।

सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन् अपि न लिप्यते ॥ ५ - ७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
योगयुक्तः	YogayuktaH	one who is devoted to the path of action	कर्मयोगी	कर्मयोगी
विशुध्दात्मा	Vishudhda-atma	one who has purified his mind	विशुद्ध अन्तःकरणवाला	ज्याचे अंतःकरण शुद्ध आहे
विजितात्मा	Vijitaatma	one who has conquered the self	जिसका मन अपने वशमें है	ज्याचे मन त्याच्या काबूत आहे
जितेन्द्रियः	JitendriyaH	one who has subdued his senses	जिसने अपने इन्द्रियोंको जित लिया है	ज्याने आपली इंद्रिये जिंकली आहेत
सर्व-भूतात्म-भूतात्मा	Sarva-Bhutaatma-Bhutaatmaa	one who realises himself as the Self in all other beings	सम्पूर्ण प्राणियोंका आत्मरुप परमात्मा ही जिसका आत्मा है	सर्व प्राणिमात्रांचा आत्मा हाच ज्याचा आत्मा झाला आहे
कुर्वन्	Kurvan	acting	करता हुआ	कर्मे करीत असताना
अपि	Api	even	भी	ही
न	Na	not	नहीं	नाही
लिप्यते	Lipyate	tainted	लिप्त होता	लिप्त होतो

अन्वय :- योगयुक्तः विशुध्दात्मा , विजितात्मा , जितेन्द्रियः , सर्वभूतात्मभूतात्मा , कुर्वन् अपि न लिप्यते ॥ ५ - ७ ॥

English translation:-

One who is fully devoted to (united with) the path of action, one who has purified his mind, one who has conquered the self, one who has subdued his senses, one who realises himself as the Self in all other beings; even while performing action, he is neither bound nor affected nor tainted.

हिन्दी अनुवाद :-

जिसका मन अपने वश में है जो जितेन्द्रिय एवं विशुद्ध अन्तःकरणवाला है और सम्पूर्ण प्राणियों में विराजमान परमात्मा ही जिसका आत्मा है ऐसा कर्मयोगी कर्म करता हुआ भी लिप्त नहीं होता।

मराठी भाषान्तर :-

जो कर्मयोगाचे आचरण करतो, ज्याचे अंतःकरण शुद्ध आहे, ज्याने स्वतःच स्वतःला जिंकले आहे व आपली इंद्रिये जिंकली आहेत, सर्व प्राणिमात्रांचा आत्मा हाच ज्याचा आत्मा झाला आहे , (सर्व प्राणिमात्रांशी ज्याचे प्रेमाने व ज्ञानाने ऐक्य झाले आहे) असा पुरुष कर्मे करीत असतानाही अलिप्त असतो .

विनोबांची गीताई :-

अंतरीं धुतला योगी जिंकूनि मन इंद्रियें
झाला जीव चि भूतांचा करुनि हि अलिप्त तो ॥ ५ - ७॥

न एव किंचित् करोमि इति युक्तः मन्येत तत्त्ववित् ।

पश्यन् शृण्वन् स्पृशन् जिघ्रन् अश्नन् गच्छन् स्वपन् श्वसन् ॥ ५ - ८॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	नहीं	नाही
एव	Eva	even	निःसन्देह	निश्चितपणे
किंचित्	Kinchit	anything	कुछ भी	काही सुद्धा
करोमि	Karomi	I do	करता हूँ	मी करतो
इति	Iti	thus	ऐसा	असा
युक्तः	YuktaH	Yogi (one who has united with Self)	(सांख्य) योगी	(सांख्य) योगी (पुरुषाने)
मन्येत	Manyet	should think	माने (कि मैं)	विचार करावा
तत्त्ववित्	Tattvavit	knower of truth	तत्त्वको जाननेवाला	तत्त्व जाणणाऱ्या
पश्यन्	Pashyan	seeing	देखता हुआ	पाहताना
शृण्वन्	Shrunvan	hearing	सुनता हुआ	ऐकताना
स्पृशन्	Sprushan	touching	स्पर्श करता हुआ	स्पर्श करताना
जिघ्रन्	Jighran	smelling	सूँघता हुआ	वास घेताना / हुंगताना
अश्नन्	Ashnan	eating	भोजन करता हुआ	खाताना
गच्छन्	Gachchhan	going	गमन करता हुआ	चालताना
स्वपन्	Swapan	sleeping	सोता हुआ	झोपताना
श्वसन्	Shvasan	breathing	श्वास लेता हुआ	श्वासोश्वास करताना

अन्वय :-

युक्तः तत्त्ववित् पश्यन् , शृण्वन् , स्पृशन् , जिघ्रन् , अश्नन् , गच्छन्, स्वपन् , श्वसन् ; (अहम्) किंचित् न एव करोमि इति मन्येत ॥ ५-८॥

English translation:-

The knower of truth, united with Self, thinks "I do nothing at all" even while seeing, hearing, touching, smelling, eating, going, sleeping, breathing.

हिन्दी अनुवाद :-

तत्त्वको जाननेवाला योगी देखता हुआ , सुनता हुआ , स्पर्श करता हुआ , सूँघता हुआ , भोजन करता हुआ , गमन करता हुआ , सोता हुआ , श्वास लेता हुआ ; वह निःसंदेह कुछ भी नहीं कर रहा है , ऐसा मानता है ।

मराठी भाषान्तर :-

योगयुक्त तत्ववेत्ता पुरुष स्वतः पाहताना , ऐकताना , स्पर्श करताना , वास घेताना , खाताना , चालताना , झोपताना , श्वासोश्वास करताना मी काहीच करीत नाही असे समजतो .

विनोबांची गीताई :-

न कांहीं मी करीं ऐसें योगी तत्त्वज्ञ जाणुनी
देखे ऐके शिवे हुंगे खाय जाय निजे श्वसे ॥ ५-८ ॥

प्रलपन् विसृजन् गृह्णन् उन्मिषन् निमिषन् अपि ।

इन्द्रियाणि इन्द्रियार्थेषु वर्तन्ते इति धारयन् ॥ ५ - ९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
प्रलपन्	Pralapan	speaking	बोलता हुआ	बोलताना
विसृजन्	Visrujan	releasing	(मलमूत्र) त्यागता हुआ	(मलमूत्र) विसर्जन करताना
गृह्णन्	GruhNan	holding	ग्रहण करता हुआ	घेताना
उन्मिषन्	UnmiShan	opening	(आँखों को) खोलता हुआ	(डोळयांच्या पापण्या) उघडताना
निमिषन्	Nimishan	closing (the eyes)	आँखों को मूँदता हुआ	(डोळयांच्या पापण्या) मिटताना
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
इन्द्रियाणि	IndriyaaNi	senses	सब इन्द्रियाँ	सर्व इंद्रिये
इन्द्रियार्थेषु	Indriya-artheshu	amongst sense objects	अपने अपने अर्थों में	आपापल्या विषयांत
वर्तन्ते	Vartante	move	बरत रही हैं	व्यवहार करतात
इति	Iti	thus	इसप्रकार	असे
धारयन्	Dhaarayan	being convinced	समझकर	समजून

अन्वय :-

प्रलपन् , विसृजन् , गृह्णन् , उन्मिषन् , निमिषन् अपि इन्द्रियाणि इन्द्रियार्थेषु वर्तन्ते इति धारयन् (अहम् किंचित् न एव करोमि इति मन्येत) ॥ ५ - ९ ॥

English translation:-

...speaking, releasing, seizing, opening and closing (the eyes) – he is convinced, "The senses move amongst the sense objects".

हिन्दी अनुवाद :-

बोलता हुआ , त्यागता हुआ , ग्रहण करता हुआ , तथा आँखों को खोलता और मूँदता हुआ भी सब इन्द्रियाँ अपने अपने अर्थों में बरत रही हैं ; इसप्रकार वह निःसन्देह ऐसा माने कि , मैं कुछ भी नहीं करता हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

बोलताना , मलमूत्र विसर्जन करताना , घेताना , डोळयांच्या पापण्या उघडताना व मिटताना (इत्यादि क्रिया करीत असताना) केवळ इंद्रियेच आपापल्या विषयांच्या ठायी वावरत आहेत (आणि मी काहीच करीत नाही असे समजतो) .

विनोबांची गीताई :-

बोले सोडी धरी किंवा पापणी हालवी ज़री

इंद्रियें आपुल्या अर्थीं वागती हें चि पाहतो ॥ ५ - ९ ॥

ब्रह्मणि आधाय कर्माणि सङ्गम् त्यक्-त्वा करोति यः ।

लिप्यते न सः पापेन पद्मपत्रम् इव अम्भसा ॥ ५ - १० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ब्रह्मणि	BrahmaNi	in Brahman	परमात्मा में	परमात्म्यामध्ये
आधाय	Aadhaaya	having placed	अर्पण कर	अर्पण करून
कर्माणि	KarmaaNi	actions	सब कर्मों को	सर्व कर्मे
सङ्गम्	Sangam	attachment	आसक्ति को	आसक्तीचा
त्यक्-त्वा	tyaktva	having abandoned	त्याग कर	त्याग करून
करोति	Karoti	acts	करता है	(कर्म) करतो
यः	YaH	who	जो (पुरुष)	जो (पुरुष)
लिप्यते	Lipyate	tainted	लिप्त होता	लिप्त होतो
न	Na	not	नहीं	नाही
सः	SaH	he	वह (पुरुष)	तो (पुरुष)
पापेन	Papen	by sin	पाप से	पापाने
पद्मपत्रम्	Padma-patram	lotus leaf	कमल के पत्ते की	कमळाचे पान
इव	Eva	like	भाँति	(कमळाच्या पाना) प्रमाणे
अम्भसा	Ambhasaa	by water	जल से	पाण्याने

अन्वय :-

यः सङ्गम् त्यक्-त्वा कर्माणि , ब्रह्मणि आधाय करोति ; सः पद्मपत्रम् इव , अम्भसा पापेन न लिप्यते ॥ ५ - १० ॥

English translation:-

He, who dedicating his actions to Brahman acts abandoning attachment, is not tainted by sin just like a lotus leaf is not tainted by water.

हिन्दी अनुवाद :-

जो पुरुष सब कर्मों को परमात्मा में अर्पण कर और आसक्ति को त्याग कर कर्म करता है ; वह पुरुष जल से कमल के पत्ते की भाँति पाप से लिप्त नहीं होता ।

मराठी भाषान्तर :-

जो फलासक्ती सोडून कर्म ब्रम्हार्पण करतो तो , जसे कमळाचे पान पाण्यात राहूनही भिजत नाही , तसा पापाने लिप्त होत नाही .

विनोबांची गीताई :-

ब्रह्मीं ठेवूनियां कर्में संग सोडुनि जो करी
पापें न लिप्त तो होय पद्म पत्र जसें जळें ॥ ५ - १० ॥

कायेन मनसा बुद्-ध्या केवलैः इन्द्रियैः अपि ।

योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गम् त्यक्-त्वा आत्मशुध्दये ॥ ५ - ११ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
कायेन	Kaayen	by body	शरीर द्वारा	शरीरद्वारा
मनसा	Manasaa	by mind	मन	मनाने
बुद्-ध्या	Bud-dhya	by intellect	बुद्धि	बुद्धीने
केवलैः	KevalaiH	only	केवल	केवळ
इन्द्रियैः	IndriyaiH	by senses	इन्द्रिय	इंद्रियांनी
अपि	Api	also	भी	(यांच्याद्वारा) ही
योगिनः	YoginaH	Yogis	कर्मयोगी (ममत्वबुद्धिरहित)	निष्काम कर्मयोगी
कर्म	Karma	action	कर्म	सर्व कर्मे
कुर्वन्ति	Kurvanti	perform	करते हैं	करतात
सङ्गम्	Sangam	attachment	आसक्ति (को)	आसक्ती (चा)
त्यक्-त्वा	Tyaktva	having abandoned	त्यागकर	त्याग करून
आत्मशुध्दये	Aatma-shudhdaye	for self purification	अन्तःकरण की शुद्धि के लिये	अंतःकरणाच्या शुद्धीसाठी

अन्वय :-

योगिनः आत्मशुध्दये कायेन , मनसा , बुद्-ध्या , केवलैः इन्द्रियैः अपि सङ्गम् त्यक्-त्वा कर्म कुर्वन्ति ॥ ५ - ११॥

English translation:-

After having abandoned attachment (to the favourable outcome i.e. fruit of action), the Yogis merely perform action by the sense organs, physical body, mind and intellect only for self-purification.

हिन्दी अनुवाद :-

योगी ममत्वबुद्धिरहित केवल इन्द्रिय , मन , बुद्धि और शरीर द्वारा आसक्ति को त्यागकर चित्त की शुद्धि के लिये कर्म करते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

निष्कामकर्मयोगी आत्म (चित्त) शुद्धीकरता शरीराने , मनाने , बुद्धीने आणि इंद्रियांनी केवळ आसक्ती सोडून कर्म करीत असतात .

विनोबांची गीताई :-

देहा मनानें बुद्धीनें इंद्रियांनी हि केवळ
आत्म - शुद्धर्थ निःसंग योगी कर्म अनुष्ठिती ॥ ५ - ११॥

युक्तः कर्मफलम् त्यक्-त्वा शान्तिम् आप्नोति नैष्ठिकीम् ।

अयुक्तः कामकारेण फले सक्तः निबध्यते ॥ ५ - १२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
युक्तः	YuktaH	the united one / the well poised	कर्मयोगी	कर्मयोगी
कर्मफलम्	Karmaphalam	fruit of action	कर्मों के फल का	कर्मफळाचा
त्यक्-त्वा	Tyaktvaa	having abandoned	त्याग कर	त्याग करून
शान्तिम्	Shaantim	peace	शान्ति को	शांती
आप्नोति	Aapnoti	attains	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो
नैष्ठिकीम्	NaiShthikeem	final	भगवत्प्राप्तिरूप	परमशांतीला (मोक्षाला)
अयुक्तः	AyuktaH	the non-united	सकाम पुरुष	सकाम पुरुष
कामकारेण	Kaama-kaareNa	impelled by desire	कामना की प्रेरणा से	कामनेच्या प्रेरणेने
फले	Phale	in fruit of action	फल में	फळामध्ये
सक्तः	SaktaH	attached	आसक्त होकर	आसक्त होऊन
निबध्यते	Nibadhyate	is bound	बँधता है	बंधनात पडतो

अन्वय :-

युक्तः कर्मफलम् त्यक्-त्वा नैष्ठिकीम् शान्तिम् आप्नोति । अयुक्तः कामकारेण फले सक्तः निबध्यते ॥ ५ - १२ ॥

English translation:-

The Yukta (the well poised Yogi) having abandoned the fruit of action attains eternal peace, the Ayukta (the non-united) impelled by desire and attached to fruit of action is bound in the cycle of life and death.

हिन्दी अनुवाद :-

योगी निष्काम कर्मों के फलका त्याग कर भगवत्प्राप्तिरूप शान्ति को प्राप्त होता है और सकाम कर्म करने वाला पुरुष कामना की प्रेरणा से फल में आसक्त होकर बँधता है ।

मराठी भाषान्तर :-

निष्काम कर्मयोगी कर्मफळाचा त्याग करून परमशांतीला (मोक्षाला) प्राप्त होतात , पण जे कर्मयोगाचे आचरण करीत नाहीत ते कामनावश झाल्याने फळात आसक्त होऊन (जन्म-मृत्यु चक्रात) बद्ध होतात.

विनोबांची गीताई :-

युक्त तो फळ सोडूनी शांति निश्चळ पावतो

अयुक्त स्वैर वृत्तीनें फळीं आसक्त बांधिला ॥ ५ - १२॥

सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्य आस्ते सुखम् वशी ।

नवद्वारे पुरे देही न एव कुर्वन् न कारयन् ॥ ५ - १३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सर्वकर्माणि	Sarva-karmaaNi	all actions	सब कर्मों को	सर्व कर्मांचा
मनसा	Manasaa	by mind	मन से	मनाने
संन्यस्य	Sannyasya	having renounced	त्याग कर	त्याग करून
आस्ते	Aaste	rests	स्थित रहता है	राहतो
सुखम्	Sukham	happily	आनन्दपूर्वक (सच्चिदानन्दघन परमात्मा के स्वरुप में)	सुखाने
वशी	Vashee	the self-controlled	अन्तःकरण जिस के वश में है	मन व इंद्रियांवर ताबा असणारा ज्ञानी पुरुष
नवद्वारे	Navadvaare	in nine-gated	नवद्वारोंवाले	नऊ दारे असणाऱ्या
पुरे	Pure	in city	घर में	घरात
देही	Dehee	embodied	शरीररुप	शरीररुप
न	Na	not	न	(काहीही) नाही
एव	Eva	even	और	व
कुर्वन्	Kurvan	acting	करता हुआ	करणारा
न	Na	not	नही	(काहीही) नाही
कारयन्	Kaarayan	causing to act	करवाता हुआ	करविणारा

अन्वय :- वशी देही सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्य, नवद्वारे पुरे, न एव कुर्वन्, न कारयन् सुखम् आस्ते ॥ ५ - १३ ॥

English translation:-

Having mentally renounced all actions, the self-controlled, the embodied one rests happily in the city of nine gates neither even acting himself nor causing others to act.

हिन्दी अनुवाद :-

अन्तःकरण जिस के वश में है ऐसा सांख्ययोग का आचरण करनेवाला पुरुष न करता हुआ और न करवाता हुआ ही नवद्वारोंवाले शरीर रुपी निवास / ग्राम / नगर में ; सब कर्मों को मन से त्याग कर आनन्दपूर्वक सच्चिदानन्दघन परमात्मा के स्वरुप में स्थित रहता है।

मराठी भाषान्तर :-

जितेंद्रिय, ज्ञानी पुरुष सर्व कर्मांचा मनाने संन्यास करून (ईश्वरार्पण करून), (दोन डोळे, दोन कान, दोन नाकपुड्या, मुख, मुत्रद्वार व गुदद्वार) नऊ द्वारांच्या देहरुपी नगरात काहीही न करता व काहीही न करविता सुखाने राहातो.

विनोबांची गीताई :-

मनानें सगळीं कर्में सोडुनी संयमी सुखें

नव – द्वार - पुरीं राहे करी ना करवी हि ना ॥ ५ - १३॥

न कर्तृत्वम् न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः ।

न कर्मफलसंयोगम् स्वभावः तु प्रवर्तते ॥ ५ - १४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	न / नही (तो)	न / नाही
कर्तृत्वम्	Kartutvam	agency	कर्तापनकी	कर्तेपण
न	Na	not	(और) न / नही	न / नाही
कर्माणि	KarmaaNi	actions	कर्मोंकी	कर्मे
लोकस्य	Lokasya	of world	मनुष्योंके	मनुष्यांचे
सृजति	Srujati	creates	रचना करते हैं	निर्माण करतो
प्रभुः	PrabhuH	Lord	परमेश्वर	परमेश्वर
न	Na	not	न / नही	न / नाही
कर्मफल-संयोगम्	Karmaphala-Sanyogam	union with fruit of action	कर्मफलके संयोगकी	कर्मफळाशी संयोग
स्वभावः	SvabhaavaH	nature	स्वभाव (ही)	प्रकृती (च)
तु	Tu	but	किन्तु	परंतु
प्रवर्तते	Pravartate	manifests	बर्त रहा है	सर्व काही निर्माण करते

अन्वय :-

प्रभुः लोकस्य न कर्तृत्वम् न कर्माणि न कर्मफलसंयोगम् सृजति। स्वभावः तु प्रवर्तते ॥ ५ - १४ ॥

English translation:-

The Lord creates neither agency (doer-ship) nor actions nor the union with fruit of action for the world, but the nature manifests itself.

हिन्दी अनुवाद :-

परमेश्वर मनुष्यों के न तो कर्तापन की, न कर्मों की और न कर्मफल के संयोग की ही रचना करते हैं; किन्तु स्वभाव ही बरत रहा है, अर्थात् प्रकृती माँ ही अपने गुणों से सब कुछ करवाती है।

मराठी भाषान्तर :-

ईश्वर प्राणिमात्रांच्यामध्ये कर्तृत्व, कर्मप्रवृत्ति तसेच कर्मफळाशी संयोगही निर्माण करीत नाही. परंतु स्वभाव म्हणजेच प्रकृतीच ह्या सर्व गोष्टी निर्माण करते.

विनोबांची गीताई :-

न कर्तेपण लोकांचे न कर्मे निर्मितो प्रभु
न कर्मीं फल - संयोग स्वभावें सर्व होतसे ॥ ५ - १४ ॥

न आदत्ते कस्यचित् पापम् न च एव सुकृतम् विभुः ।

अज्ञानेन आवृतम् ज्ञानम् तेन मुह्यन्ति जन्तवः ॥ ५ - १५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	न / नही	न / नाही
आदत्ते	Aadatte	takes	ग्रहण करता है	स्वीकार करतो
कस्यचित्	Kasyachit	of anyone	किसी के	कुणाचे
पापम्	Paapam	sin	पापकर्म को	पापकर्म
न	Na	not	न / नही (किसी के)	न / नाही
च	Cha	and	और	आणि
एव	Eva	even	ही	सुद्धा
सुकृतम्	Sukrutam	virtue	शुभकर्म को	शुभकर्म
विभुः	VibhuH	Omnipresent (the Lord)	सर्वव्यापी परमेश्वर भी	सर्वव्यापी परमेश्वर
अज्ञानेन	Adnyaanen	by ignorance	अज्ञान के द्वारा	अज्ञानाने
आवृतम्	Aavrutam	enveloped	ढका हुआ है	आच्छादित
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान	ज्ञान
तेन	Ten	by this	उसी से	त्यामुळे
मुह्यन्ति	Muhyanti	are deluded	मोहित हो रहे हैं	मोहित होतात
जन्तवः	JantavaH	beings	(सब अज्ञानी) मनुष्य	(सर्व अज्ञानी) माणसे

अन्वय :-

विभुः न कस्यचित् पापम् , न च एव सुकृतम् आदत्ते। अज्ञानेन ज्ञानम् आवृतम् , तेन जन्तवः मुह्यन्ति ॥ ५ - १५ ॥

English translation:-

The Lord accepts neither the sin nor even the virtue of anyone; knowledge is veiled by ignorance, thereby beings are deluded.

हिन्दी अनुवाद :-

सर्वव्यापी परमेश्वर न किसी के पापकर्म को और न किसी के शुभकर्म को ही ग्रहण करता है ; किन्तु अज्ञान के द्वारा ज्ञान ढका हुआ है , उसी से सब अज्ञानी मनुष्य मोहित हो रहे हैं।

मराठी भाषान्तर :-

सर्वव्यापी परमेश्वर कोणत्याही प्राणिमात्राचे पाप वा पुण्य स्वीकार करीत नाही . लोकांचे ज्ञान अज्ञानाने आच्छादित झाल्यामुळे ते मोहित होतात .

विनोबांची गीताई :-

न घे पाप हि कोणाचें न वा पुण्य हि तो विभु
अज्ञानें झांकिलें ज्ञान त्यामुळें जीव मोहित ॥ ५ - १५॥

ज्ञानेन तु तत् अज्ञानम् येषाम् नाशितम् आत्मनः ।

तेषाम् आदित्यवत् ज्ञानम् प्रकाशयति तत् परम् ॥ ५ - १६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ज्ञानेन	Dnyaanen	by knowledge (wisdom)	(तत्त्व) ज्ञान द्वारा	(तत्त्व) ज्ञानाने
तु	Tu	but	परन्तु	परंतु
तत्	Tat	that	वह	ते
अज्ञानम्	Adnyaanam	ignorance	अज्ञान	अज्ञान
येषाम्	Yeshaam	of whom	जिस का	ज्यांचे
नाशितम्	Naashitam	is destroyed	नष्ट कर दिया गया है	नाहीसे झालेले असते
आत्मनः	AatmanaH	of self	परमात्मा के	परमात्म्या विषयीचे
तेषाम्	TheShaam	of them	उनका (वह)	त्यांचे
आदित्यवत्	Aadityavat	like the Sun	सूर्य के सदृश	सूर्याप्रमाणे
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान	ज्ञान
प्रकाशयति	Prakaashayati	reveals /shines forth	प्रकाशित कर देता है	प्रकाशित करते
तत्	Tat	that	उस	त्या
परम्	Param	Supreme (the highest)	सच्चिदानन्दघन परमात्मा को	सच्चिदानंदघन परमात्म्याला

अन्वय :-

येषाम् तु तत् अज्ञानम् आत्मनः ज्ञानेन नाशितम् , तेषाम् ज्ञानम् आदित्यवत् तत् परम् प्रकाशयति ॥ ५ - १६ ॥

English translation:-

But in whom ignorance is destroyed by Self knowledge, in them knowledge reveals the Supreme like the Sun.

हिन्दी अनुवाद :-

परन्तु जिसका वह अज्ञान परमात्माके तत्त्वज्ञानद्वारा नष्ट कर दिया गया है , उनका वह ज्ञान सूर्यके सदृश उस सच्चिदानन्दघन परमात्माको प्रकाशित कर देता है ।

मराठी भाषान्तर :-

ज्यांचे आत्म्याविषयीचे अज्ञान , आत्मज्ञानाने नाहीसे झालेले असते , त्यांचे ते आत्मज्ञान सूर्याप्रमाणे , त्या परश्रेष्ठ तत्त्वाला प्रकाशित करते .

विनोबांची गीताई :-

गेले अज्ञान तें ज्यांचें आत्म - ज्ञानें तयां मग
पर ब्रह्म दिसे स्वच्छ ज़णूं सूर्ये प्रकाशिलें ॥ ५ - १६ ॥

तद्-बुध्दयः तदात्मानः तन्निष्ठाः तत्परायणाः ।

गच्छन्ति अपुनरावृत्तिम् ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥ ५ – १७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तद्-बुध्दयः	Tad-BudhdayaH	intellect absorbed in that	जिन की बुद्धि तद्रूप हो रही है	ज्यांची बुद्धी तद्रूप झालेली असते
तदात्मानः	Tad-aatmaanaH	their self (mind) being that	जिन का मन तद्रूप हो रहा है	ज्यांचे मन तद्रूप झालेले असते
तन्निष्ठाः	Tanni-ShthaaH	established in that	सच्चिदानन्दघन परमात्मा में ही जिन की निरन्तर एकीभाव से स्थिति है	त्यावरच ज्यांची निष्ठा स्थिर झालेली असते
तत्परायणाः	Tat-paraayaNaaH	with that as the Supreme goal	तत्परायण पुरुष	त्यातच त्यांचे चित्त एकाग्र झालेले असते
गच्छन्ति	Gachchhanti	they go	प्राप्त होते हैं	प्राप्त होतात
अ-पुनरावृत्तिम्	A-Punar-aavruttim	not again returning	अपुनरावृत्ति को अर्थात् परमगति को	परत न येणाऱ्या म्हणजेच परमगतीला
ज्ञाननिर्धूत-कल्मषाः	Dnyaan-Nirdhoota-KalmaShaaH	whose sins have been dispelled by knowledge	ज्ञान के द्वारा पापरहित होकर	ज्यांचे पाप ज्ञानाने पार धुतले गेलेले आहे

अन्वय :- तद्-बुध्दयः , तदात्मानः , तन्निष्ठाः , तत्परायणाः ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः अपुनरावृत्तिम् गच्छन्ति ॥ ५ – १७ ॥

English translation:-

With mind and intellect established in That (realisation of the Supreme Self) as the Supreme goal, they, whose sins have been dispelled by knowledge, reach a state of no return (from the cycle of life and death).

हिन्दी अनुवाद :- जिन का मन तद्रूप हो रहा है , जिन की बुद्धि तद्रूप हो रही है और सच्चिदानन्दघन परमात्मा में ही जिन की निरन्तर एकीभाव से स्थिति है , ऐसे तत्परायण पुरुष ज्ञान के द्वारा पापरहित होकर अपुनरावृत्ति को अर्थात् परमगति को प्राप्त होते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

त्या परब्रह्माच्या ठिकाणी ज्यांचे मन व बुद्धी रममाण झालेली असतात , त्यावरच ज्यांची निष्ठा स्थिर झालेली असते , त्यातच ज्यांचे चित्त एकाग्र झालेले असते व ज्यांचे पाप ज्ञानाने पार धुतले गेलेले आहे , ते पुनः जन्म-मरणाच्या भोवऱ्यात सापडत नाहीत (मुक्त होतात) .

विनोबांची गीताई :-

रंगले त्यांत ओतूनि बुद्धि निश्चय जीवन

पुन्हां येती न माघारे ज्ञानें पाप धुऊनियां ॥ ५ - १७ ॥

विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।

शुनि च एव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥ ५ - १८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
विद्याविनयसंपन्ने	Vidya-Vinaya-Sampanne	endowed with learning and knowledge	विद्या और विनय युक्त	विद्या व विनय यांनी युक्त
ब्राह्मणे	BrahmaNe	in a brahmana	ब्राह्मण में	ब्राह्मणात
गवि	Gavi	in a cow	गौ	गाईत
हस्तिनि	Hastini	in an elephant	हाथी	हत्तीमध्ये
शुनि	Shuni	in a dog	कुत्ते	कुत्र्यात
च	Cha	and	और	सुद्धा
एव	Eva	even	ही होते हैं	तसेच
श्वपाके	Shvapake	in a pariah (dog-eater) / in an outcast	चाण्डाल में भी	चांडाळाच्या ठायी सुद्धा
च	Cha	and	तथा	आणि
पण्डिताः	PaNDitaaH	sages (the wise)	ज्ञानीजन	ज्ञानी माणसे
समदर्शिनः	Sama-darshinaH	seeing equality	समदर्शी	सर्वांच्या ठिकाणी सारखी दृष्टी असणारे

अन्वय :-

पण्डिताः विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे , गवि , हस्तिनि , शुनि च श्वपाके च एव समदर्शिनः (सन्ति) ॥ ५ - १८ ॥

English translation:-

The sages view equally a brahmana endowed with learning and humility, a cow, an elephant, a dog and even an outcast.

हिन्दी अनुवाद :-

वे ज्ञानीजन विद्या और विनययुक्त ब्राह्मण में तथा गौ , हाथी , कुत्ते और चाण्डाल में भी समदर्शी ही होते हैं , अर्थात् वे सब में परमात्मा के दर्शन पाते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

ज्ञानी लोक , विद्या व विनय यांनी युक्त ब्राह्मण तसेच गाय , हत्ती , कुत्रा आणि चांडाळ या सर्वांकडे समभावाने पाहतात .

विनोबांची गीताई :-

विद्या विनय संपन्न द्विज गाय तसा गज

श्वान चांडाळ हे सारे तत्त्व-ज्ञ सम पाहती ॥ ५ - १८॥

इह एव तैः जितः सर्गः येषाम् साम्ये स्थितम् मनः ।

निर्दोषम् हि समम् ब्रह्म तस्मात् ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥ ५ - १९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
इह	Eha	here	इस जीवित अवस्था में	येथे (जिवंतपणीच)
एव	Eva	even	ही	च
तैः	TaiH	by them	उन के द्वारा	त्यांनी
जितः	JitaH	conquered	जीत लिया (गया है)	जिंकलेला आहे
सर्गः	SargaH	birth (creation)	सम्पूर्ण संसार	जन्म
येषाम्	YeShaam	of whom	जिन का	ज्यांच्या
साम्ये	Saamye	in evenness	समभाव में	समभावाने
स्थितम्	Sthitam	fixed	स्थित (है)	स्थिर असतो
मनः	ManaH	mind	मन	मन
निर्दोषम्	Nirdosham	spotless	निर्दोष	निर्दोष
हि	Hi	indeed	क्योंकि	कारण
समम्	Samam	equal	सम (है)	सम
ब्रह्म	Brahma	Brahmana	सच्चिदानन्द्घन परमात्मा	ब्रह्म
तस्मात्	Tasmaat	therefore	इस से	म्हणून
ब्रह्मणि	Brahmani	in Brahmana	सच्चिदानन्द्घन परमात्मा में	सच्चिदानन्द्घन परमात्म्यामध्ये
ते	Te	they	वे	ते
स्थिताः	SthitaaH	established	स्थित (हैं)	स्थित असतात

अन्वय :-

येषाम् मनः साम्ये स्थितम् , तैः इह एव सर्गः जितः , ब्रह्म हि समम् निर्दोषम् , तस्मात् ते ब्रह्मणि स्थिताः ॥ ५ - १९ ॥

English translation:-

Even here birth is overcome by those whose mind rests in evenness; Brahman is indeed spotless and equal, therefore they are established in Brahman.

हिन्दी अनुवाद :-

जिनका मन समभाव में स्थित है उन के द्वारा इस जीवित अवस्था में ही सम्पूर्ण संसार जीत लिया गया है ; क्योंकि सच्चिदानन्दघन परमात्मा निर्दोष और सम है , इससे वे सच्चिदानन्द्घन परमात्मा में ही स्थित हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

ज्यांच्या मनामध्ये समभाव सतत असतो , त्यांनी येथेच (जिवंतपणीच) संसार जिंकलेला आहे ; कारण ब्रह्म हे निर्दोष व सम आहे म्हणून ते ब्रह्माच्या ठायी स्थिर झालेले असतात , म्हणजेच असे समदर्शी पुरुष ब्रह्ममय होतात .

विनोबांची गीताई :-

इथें चि जिंकला जन्म समत्वीं मन रोवुनी

निर्दोष सम जें ब्रह्म झाले तेथें चि ते स्थिर ॥ ५ - १९॥

न प्रहृष्येत् प्रियम् प्राप्य न उद्विजेत् प्राप्य च अप्रियम् ।

स्थिरबुध्दिः असंमूढः ब्रह्मवित् ब्रह्मणि स्थितः ॥ ५ - २० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	neither	नहीं	नाही
प्रहृष्येत्	Prahrushyet	should rejoice	हर्षित हो	आनंदित होत
प्रियम्	Priyam	the pleasant	प्रिय को	प्रिय गोष्ट
प्राप्य	Praapya	having obtained	प्राप्त होकर	प्राप्त झाल्यावर
न	Na	nor	नहीं	नाही
उद्विजेत्	Udvijet	should grieve	उद्विग्न हो	उद्विग्न होत
प्राप्य	Praapya	having obtained	प्राप्त होकर	प्राप्त झाल्यावर
च	Cha	and	और	आणि
अप्रियम्	Apriyam	the unpleasant	अप्रिय को	अप्रिय गोष्ट
स्थिर-बुध्दिः	Sthir-budhdiH	one with steady intellect	स्थिरबुद्धि	स्थिरबुद्धी
असंमूढः	A-SammudhaH	undeluded	संशयरहित	संशयरहित
ब्रह्मवित्	Brahmavit	knower of Brahman	ब्रह्मवेत्ता पुरुष	ब्रह्मवेत्ता पुरुष
ब्रह्मणि	Brahmani	in Brahman	सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मा में (एकीभावसे नित्य)	ब्रह्मस्वरुपामध्ये
स्थितः	SthitaH	established	स्थित (है)	नित्य स्थिर राहातो

अन्वय :-

प्रियम् प्राप्य न प्रहृष्येत् , अप्रियम् प्राप्य च न उद्विजेत् , (एवम्) स्थिरबुध्दिः , असंमूढः ब्रह्मवित् ब्रह्मणि स्थितः ॥ ५ - २० ॥

English translation:-

With steady intellect, established in Brahman, the undeluded knower of Brahman neither rejoices on obtaining what is pleasant nor grieves on obtaining what is unpleasant.

हिन्दी अनुवाद :-

जो पुरुष प्रिय को प्राप्त होकर हर्षित नहीं हो और अप्रिय को प्राप्त होकर उद्विग्न न हो ; वह स्थिरबुद्धि संशयरहित ब्रह्मवेत्ता पुरुष सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मा में एकीभाव से नित्य स्थित है ।

मराठी भाषान्तर :-

जो प्रिय वस्तूच्या प्राप्तीने आनंदित होत नाही आणि अप्रिय वस्तू प्राप्त झाली असता उद्विग्न होत नाही , तो स्थिर बुद्धीचा आणि कधीही मोहात न गुंतणारा ब्रह्मज्ञानी पुरुष , ब्रह्मस्वरुपामध्ये नित्य स्थिर असतो .

विनोबांची गीताई :-

प्रिय लाभें नको हर्ष नको उद्वेग अप्रियें
बुद्धि निश्चळ निर्मोह ब्रह्मीं ज्ञानी स्थिरावला ॥ ५ - २० ॥

बाह्यस्पर्शेषु असक्तात्मा विन्दति आत्मनि यत् सुखम् ।

सः ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखम् अक्षयम् अश्नुते ॥ ५ - २१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
बाह्यस्पर्शेषु	Baahya-Sparsheshu	in external contacts	बाहरके विषयोंमें	बाह्यस्पर्शादि विषयभोगात
असक्तात्मा	Asakta-aatmaa	whose mind is unattached	आसक्ति रहित अन्तःकरणवाला साधक	आसक्तिरहित (अन्तःकरणाचा) साधक
विन्दति	Vindanti	finds	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो
आत्मनि	Aatmani	in Self	आत्मा में स्थित	आत्म्यामध्ये स्थित
यत्	Yat	which	जो (ध्यानजनित सात्विक)	जो
सुखम्	Sukham	happiness	आनन्द है	आनन्द
सः	SaH	he	वह	तो
ब्रह्मयोग-युक्तात्मा	Brahma-Yoga-Yuktaatmaa	one who is united to Brahman by Yoga	सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मा के ज्ञानरूप योग में अभिन्नभाव से स्थित पुरुष	ब्रह्मयोगयुक्त पुरुष
सुखम्	Sukham	bliss	आनन्द का	आनंदाचा
अक्षयम्	Akshayam	eternal	अक्षय	अक्षय
अश्नुते	Ashnute	attains	अनुभव करता है	अनुभव घेतो

अन्वय :-

(यः) बाह्यस्पर्शेषु असक्तात्मा (सः) आत्मनि यत् सुखम् विन्दति , (तत्) अक्षयम् सुखम् सः ब्रह्मयोगयुक्तात्मा अश्नुते ॥ ५ - २१ ॥

English translation:-

Unattached to external contacts he finds the happiness that is in the Self, uniting oneself to Brahman by Yoga, he attains eternal bliss.

हिन्दी अनुवाद :-

बाहर के विषयों में आसक्तिरहित अन्तःकरणवाला साधक आत्मा में स्थित जो ध्यानजनित सात्विक आनन्द है , उस को प्राप्त होता है , तदनन्तर वह सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मा के ज्ञानरूप योग में अभिन्नभाव से स्थित पुरुष अक्षय आनन्द का अनुभव करता है ।

मराठी भाषान्तर :-

जो बाह्यस्पर्शादि विषयभोगात आसक्त होत नाही त्यालाच आत्मसुख मिळते . तोच ब्रह्मयोगयुक्त पुरुष चिरंतन , शाश्वत सुखाला प्राप्त होतो .

विनोबांची गीताई :-

विटला विषयीं ज्ञाणे अंतरीं सुख काय तें
ब्रह्मी मिसळला तेव्हां भोगी तें सुख अक्षय ॥ ५ - २१ ॥

ये हि संस्पर्शजाः भोगाः दुःखयोनयः एव ते ।

आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥ ५ - २२॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ये	Ye	which (those)	(जो) ये (इन्द्रिय तथा)	हे (जितके)
हि	Hi	for / verily	निःसन्देह	निश्चितपणे
संस्पर्शजाः	Sam-Sparsha-jaaH	born of contacts	विषयों के संयोग से उत्पन्न होनेवाले	इंद्रियांच्या व विषयांच्या स्पर्शापासून मिळणारे
भोगाः	BhogaaH	enjoyments	(सब) भोग (हैं)	सुख (आहेत)
दुःखयोनयः	DuHkha-YonayaH	wombs / generators of sorrow	दुःख के हेतु (हैं)	दुःखाचे कारण (आहेत)
एव	Eva	only	ही	फक्त
ते	Te	those	वे	ते सर्व
आद्य-न्तवन्तः	Aadyanta-VantaH	having beginning and end	आदि अन्तवाले अर्थात् अनित्य	त्यांना उत्पत्ती व नाश असल्यामुळे - अनित्य
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
न	Na	not	नहीं	नाही
तेषु	Teshu	in them	उन में	त्यात
रमते	Ramate	rejoices	रमता	रममाण होतात
बुधः	BudhaH	the wise one	बुद्धिमान् पुरुष	ज्ञानी / विवेकी पुरुष

अन्वय :- हे कौन्तेय ! ये हि संस्पर्शजाः भोगाः ते दुःखयोनयः आद्यन्तवन्तः एव, तेषु बुधः न रमते ॥ ५-२२॥

English translation:-

O son of Kunti, for the enjoyments / delights that are born of contacts are only generators (wombs) of sorrow; they have a beginning and a definite end (and therefore being non-lasting / impermanent), the wise one does not rejoice in them.

हिन्दी अनुवाद :-

जो ये इन्द्रिय तथा विषयों के संयोग से उत्पन्न होनेवाले सब भोग हैं, यद्यपि विषयी पुरुषों को सुखरुप भासते हैं तो भी निःसन्देह दुःख के ही हेतु हैं और आदि अन्तवाले अर्थात् अनित्य हैं। इसलिये हे अर्जुन ! बुद्धिमान् विवेकी पुरुष उन में नहीं रमता है।

मराठी भाषान्तर :-

हे कुंतीपुत्र अर्जुना, इंद्रियांच्या व विषयांच्या स्पर्शापासून मिळणारे जे सुख आहे ते दुःखाचे कारण आहे; त्यांना उत्पत्ती आणि नाश असल्यामुळे (ते शाश्वत आनंद देणारे नाहीत) म्हणून ज्ञानी पुरुष त्यात रममाण होत नाही.

विनोबांची गीताई :-

विषयांतील ज़े भोग ते दुःखास चि कारण
येतीं ज़से तसे ज़ाती विवेकी न रमे तिथें ॥ ५-२२॥

शक्नोति इह एव यः सोढुम् प्राक् शरीरविमोक्षणात् ।

कामक्रोधोद्भवम् वेगम् सः युक्तः सः सुखी नरः ॥ ५ - २३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
शक्नोति	Shaknoti	is able	समर्थ हो जाता है	करू शकतो
इह	Iha	here	इस (मनुष्य-शरीर में)	या (जगात जिवंत असताना)
एव	Eva	even	ही	सुद्धा
यः	YaH	he	जो (साधक)	जो (साधक)
सोढुम्	Sodhum	to withstand	सहन करने में	सहन करण्यास
प्राक्	Praak	before	पहले - पहले	होण्यापूर्वी
शरीर-विमोक्षणात्	Shareer-Vi-mokshaNaat	liberation from the physical body	शरीर का नाश (होने से)	शरीराचा नाश (होण्यापूर्वीच)
काम-क्रोधोद्भवम्	Kama-krodha-Udbhavam	born of desire and anger	काम - क्रोध से उत्पन्न होनेवाले	काम-क्रोधांपासून उत्पन्न झालेला
वेगम्	Vegam	force	वेग को	आवेग
सः	SaH	he	वही	तो (च)
युक्तः	YuktaH	Yogi	योगी (है)	योगी
सः	SaH	he	वही	तो (च)
सुखी	Sukhee	happy	सुखी (है)	सुखी
नरः	NaraH	man	पुरुष	पुरुष

अन्वय :-

इह एव शरीरविमोक्षणात् प्राक् , यः कामक्रोधोद्भवम् वेगम् सोढुम् शक्नोति , सः नरः युक्तः सः सुखी (भवति) ॥ ५ - २३ ॥

English translation:-

He who is able to resist the impulses of desire and anger even here in this world before he finally quits / abandons the physical body; he is a Yogi and a happy man.

हिन्दी अनुवाद :-

जो साधक इस मनुष्यशरीर में शरीर का नाश होने से पहले ही काम और क्रोध से उत्पन्न होनेवाले वेग को सहन करने में समर्थ हो जाता है ; वही पुरुष योगी है और वही सुखी है ।

मराठी भाषान्तर :-

जो या जगात जिवंत असताना काम-क्रोधांपासून उत्पन्न झालेला आवेग सहन करू शकतो तोच योगी आणि सुखी पुरुष होय .

विनोबांची गीताई :-

प्रयत्नें मरणापूर्वीं ह्या देहीं जिरवूं शके
काम - क्रोधांतले वेग तो योगी तो खरा सुखी ॥ ५ - २३ ॥

यः अन्तःसुखः अन्तरारामः तथा अन्तर्ज्योतिः एव यः ।

सः योगी ब्रह्मनिर्वाणम् ब्रह्मभूतः अधिगच्छति ॥ ५ - २४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यः	YaH	who	जो (पुरुष)	जो (पुरुष)
अन्तःसुखः	AntaH-SukhaH	one whose happiness is within	अन्तरात्मा में ही सुखवाला	आपल्या (स्वतःच्याच) अंतरंगामध्ये सुख प्राप्त करणारा
अन्तरारामः	Antaraa-RaamaH	one who rejoices within	आत्मा में ही रमण करनेवाला है	स्वस्वरुपामध्ये रममाण होणारा
तथा	Tatha	also	तथा	तसेच
अन्तर्ज्योतिः	Antar-JyotiH	one who is illuminated within	जो आत्मा में ही ज्ञानवाला है	आत्मस्वरुप हाच ज्याचा प्रकाश आहे
एव	Eva	even / alone	निःश्चय कर	(ब्रह्माच्या शिवाय काहीही नाही असा) निश्चय करून
यः	YaH	who	जो (पुरुष)	जो (पुरुष)
सः	SaH	that	वह	तो
योगी	Yogi	Yogi	(सांख्य) योगी	योगी पुरुष
ब्रह्मनिर्वाणम्	Braha-Nirvanam	bliss of Brahman / absolute freedom	शान्त ब्रह्म को	ब्रह्मस्वरुपाला
ब्रह्मभूतः	Brahma-BhootaH	becoming Brahman	सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मा के साथ एकीभावको प्राप्त	ब्रह्मस्वरूपाशी एकरुप होऊन
अधिगच्छति	Adhi-gachchhati	attains	प्राप्त होता है	प्राप्त करतो

अन्वय :-

यः अन्तःसुखः , अन्तरारामः , तथा यः अन्तर्ज्योतिः एव , सः योगी ब्रह्मभूतः ब्रह्मनिर्वाणम् अधिगच्छति ॥ ५ - २४ ॥

English translation:-

He whose happiness is within (himself), whose delight is within, whose illumination is within; only that Yogi becomes Brahman and gains the bliss of Brahman.

हिन्दी अनुवाद :-

जो पुरुष निःश्चय कर अन्तरात्मा में ही सुखवाला है , आत्मा में ही रमण करनेवाला है तथा जो आत्मा में ही ज्ञानवाला है ; वह सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मा के साथ एकीभाव को प्राप्त योगी , शान्त ब्रह्म को प्राप्त होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

जो पुरुष आपल्या स्वतःच्याच अंतरंगामध्ये सुख प्राप्त करतो , स्वस्वरुपामध्ये रममाण होतो तसेच ज्याच्यामध्ये आत्मस्वरुप हाच प्रकाश आहे , तो योगी पुरुष ब्रह्मस्वरूपाशी एकरुप होऊन ब्रह्मस्वरुपाला प्राप्त करतो .

विनोबांची गीताई :-

प्रकाश स्थिरता सौख्य अंतरी लाभलीं जया
ब्रह्म होऊनि तो योगी ब्रह्म निर्वाण मेळवी ॥ ५ - २४॥

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणम् ऋषयः क्षीणकल्मषाः ।

छिन्नद्वैधाः यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ॥ ५ - २५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
लभन्ते	Labhante	attain	प्राप्त होते हैं	मिळवितात
ब्रह्मनिर्वाणम्	Brahma-NirvaNam	bliss of Brahman	शान्त ब्रह्मको	ब्रह्मनिर्वाणरुप मोक्ष
ऋषयः	Rhusha-yaH	sages	ब्रह्मवेत्ता पुरुष	(ते) तत्ववेत्ते ऋषी
क्षीणकल्मषाः	KsheeNa-Kalma-ShaaH	those whose sins are destroyed	जिनके सब पाप नष्ट हो गये हैं	ज्यांची सर्व पापे नाहीशी झालेली आहेत
छिन्नद्वैधाः	Chhinna-Dvai-dhaaH	those whose dualities are destroyed	जिनके सब संशय ज्ञानके द्वारा निवृत्त हो गये हैं	ज्यांची द्विधा मनोवृत्ती नाहीशी झालेली आहे
यतात्मानः	Yat-Aatmaa-naH	those who are self controlled	और जिनका जीता हुआ मन निश्चलभावसे परमात्मामें स्थित है	ज्यांनी आत्मसंयमन केलेले आहे
सर्वभूतहिते	Sarva-Bhoota-Hite	in welfare of all beings	सम्पूर्ण प्राणियोंके हितमें	सर्व प्राणिमात्रांच्या हितासाठी
रताः	RataaH	revel	रत हैं	(जे) रममाण झालेले आहेत

अन्वय :- क्षीणकल्मषाः , छिन्नद्वैधाः , यतात्मानः , सर्वभूतहिते रताः ऋषयः ब्रह्मनिर्वाणम् लभन्ते ॥ ५ - २५ ॥

English translation:-

Sages whose sins have been destroyed, whose dualities are destroyed, who are self-controlled and who revel in the welfare of all beings attain the Bliss of Brahman.

हिन्दी अनुवाद :-

जिनके सब पाप नष्ट हो गये हैं , जिनके सब संशय ज्ञान के द्वारा निवृत्त हो गये हैं ,जो सम्पूर्ण प्राणियों के हित में रत हैं और जिनका जीता हुआ मन निश्चलभाव से परमात्मा में स्थित है , वे ब्रह्मवेत्ता पुरुष शान्त ब्रह्म को प्राप्त होते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

ज्यांची सर्व पापे नाहीशी झालेली आहेत , ज्यांची द्विधा मनोवृत्ती नाहीशी झालेली आहे , ज्यांनी आत्मसंयमन केलेले आहे व सर्व प्राणिमात्रांच्या हितात जे रममाण झालेले आहेत , ते तत्ववेत्ते ऋषी ब्रह्मनिर्वाणरुप मोक्ष मिळवितात.

विनोबांची गीताई :-

फिटले दोष शंका हि मुठींत धरिलें मन

पावले ब्रह्म - निर्वाण ज्ञानी विश्व - हितीं रत ॥ ५ - २५ ॥

कामक्रोधवियुक्तानाम् यतीनाम् यत - चेतसाम् ।

अभितः ब्रह्मनिर्वाणम् वर्तते विदित - आत्मनाम् ॥ ५ - २६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
कामक्रोध-वियुक्तानाम्	Kamakrodha-Viyuktaanaam	who are freed from desire and anger	काम - क्रोध से रहित	कामक्रोधांचा त्याग केलेले
यतीनाम्	Yatinaam	of the self controlled ascetics	ज्ञानी पुरुषों के लिये	आत्मसंयमी पुरुषांना
यत - चेतसाम्	Yat-Chetsaam	who have controlled their mind	जीते हुए चित्तवाले	ज्यांनी आत्मसंयम केलेला आहे
अभितः	AbhitaH	completely	सब ओर से	चोहोकडे
ब्रह्मनिर्वाणम्	Brahma-NirvaaNam	bliss of Brahman	शान्त परब्रह्म परमात्मा ही	ब्रह्माची शांती
वर्तते	Vartate	exists	परिपूर्ण हैं	प्राप्त होते
विदित - आत्मनाम्	Vidit-Aatmanaam	who have known the Self	परब्रह्म परमात्मा का साक्षात्कार किये हुए	ज्यांनी स्वतःला ओळखले आहे

अन्वय :-

काम - क्रोध - वियुक्तानाम् , यत - चेतसाम् , विदित – आत्मनाम् ; यतीनाम् अभितः ब्रह्मनिर्वाणम् वर्तते ॥ ५ - २६ ॥

English translation:-

In the case of those who are freed from desire and anger, who are self-controlled, who have subdued their mind completely, who have realised the Self, the bliss of Brahman resides in them.

हिन्दी अनुवाद :-

काम - क्रोध से रहित जीते हुए चित्तवाले , परब्रह्म परमात्मा का साक्षात्कार किये हुए ज्ञानी पुरुषों के लिये सब ओर से शान्त परब्रह्म परमात्मा ही परिपूर्ण हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

ज्यांनी कामक्रोधांचा त्याग केलेला आहे , ज्यांनी स्वतःचा संयम केलेला आहे , ज्यांनी स्वतःला ओळखले आहे , त्या संयमी पुरुषांना चोहोकडे सदैव ब्रह्माची शांती प्राप्त होते .

विनोबांची गीताई :-

काम क्रोधांस जिंकूनि यत्नें चित्तास बांधिती
देखती ब्रह्म निर्वाण आत्म - ज्ञानी चहूंकडे ॥ ५ - २६ ॥

स्पर्शान् कृत्वा बहिः बाह्यान् चक्षुः च एव अन्तरे भ्रुवोः ।

प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ॥ ५ - २७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
स्पर्शान्	Sparshaan	contacts	विषय भोगों को न चिन्तन करता हुआ	स्पर्शादि विषयास
कृत्वा	Krutvaa	having done	निकालकर	सोडून देऊन
बहिः	BahiH	outside	बाहर	बाहेर
बाह्यान्	Bahyaan	external	बाहर के	बाह्य
चक्षुः	ChakshuH	eyes	नेत्रों की दृष्टि को	नेत्रांची दृष्टी
च	Cha	and	और	और
एव	Eva	as though	ही	केवळ
अन्तरे	Antare	in middle	बीच में स्थित कर (तथा)	मध्ये
भ्रुवोः	BhruvoH	of two eyebrows	भृकुटी के	दोन्ही भुवयांच्या
प्राणापानौ	PraNaa paanau	incoming and outgoing breaths	प्राण और अपानवायु को	प्राण आणि अपान या वायूंना
समौ	Samou	equal	सम	समान
कृत्वा	Krutvaa	having done	कर	करून
नासाभ्यन्तर-चारिणौ	Nasaabhya-antara-chaariNau	moving inside nostrils	नासिका में विचरनेवाले	नाकामध्ये संचार करणाऱ्या

अन्वय :-

(यः मुनिः) बाह्यान् स्पर्शान् बहिः कृत्वा , चक्षुः च एव भ्रुवोः अन्तरे कृत्वा , प्राणापानौ (च) नासाभ्यन्तरचारिणौ समौ (कृत्वा)॥ ५ - २७ ॥

English translation:-

Shutting out external contacts and fixing the gaze as though between the two eyebrows, equalizing the flow of incoming and outgoing breaths in the nostrils.

हिन्दी अनुवाद :-

(जो मुनि है वह) बाहर के विषय भोगों को न चिन्तन करता हुआ बाहर ही निकालकर और नेत्रों की दृष्टि को दोनों भृकुटी के बीच में स्थित कर तथा नासिका में विचरनेवाले प्राण और अपानवायु को सम कर लेता है ।

मराठी भाषान्तर :-

बाह्यविषय बाहेर ठेवून , दृष्टी दोन्ही भुवयांच्यामध्ये स्थिर करून , प्राण व अपान हे दोन्ही नाकाच्या आत समगतीने चालू करून ...

विनोबांची गीताई :-

विषयांचा बहिष्कार डोळा भ्रू - संगमीं स्थिर
करूनि नासिका - स्थानीं प्राणापान हि सारखे ॥ ५ - २७॥

यतेन्द्रियमनोबुद्धिः मुनिः मोक्षपरायणः ।

विगतेच्छाभयक्रोधः यः सदा मुक्तः एव सः ॥ ५ - २८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यतेन्द्रियमनोबुद्धिः	Yatendriya-Mano-buddhiH	with senses, mind and intellect controlled	जिसकी इन्द्रियाँ , मन और बुद्धि जीती हुई हैं	ज्याने इंद्रिये , मन व बुद्धी यांना नियमित केलेले आहे
मुनिः	MuniH	sage	मुनि	मुनी
मोक्षपरायणः	Moksha-parayaNaH	with liberation as goal	मोक्षपरायण	(जो) मोक्षपरायण झाला आहे असा
विगतेच्छाभयक्रोधः	Vigatechchha-Bhaya-KrodhaH	freed from desire , anger and fear	इच्छा , भय और क्रोध से रहित	इच्छा , भय व क्रोध रहित
यः	YaH	who	जो	जो
सदा	Sadaa	forever	सदा	नेहमी
मुक्तः	MuktaH	liberated	मुक्त	मुक्त
एव	Eva	verily	ही है	च
सः	SaH	he	वह	तो

अन्वय :-

यः मुनिः यतेन्द्रियमनोबुद्धिः , विगतेच्छाभयक्रोधः , मोक्षपरायणः (स्यात्)

सः सदा मुक्तः एव ॥ ५ - २८ ॥

English translation:-

Having the senses, mind and intellect controlled, with liberation as the goal, the sage, freed from desire, anger and fear, is verily liberated forever.

हिन्दी अनुवाद :-

जिस की इन्द्रियाँ , मन और बुद्धि जीती हुई हैं , ऐसा जो मोक्षपरायण मुनि कामना , भय और क्रोध से रहित हो गया है वह सदा मुक्त ही है ।

मराठी भाषान्तर :-

.... इंद्रिये , मन व बुद्धी ह्यांचे नियमन करून ; इच्छा , भय व क्रोध ही टाकून जो मोक्षपरायण होतो , तो मुनी सदा मुक्तच असतो .

विनोबांची गीताई :-

आवरी मुनि मोक्षार्थी इंद्रियें मन बुद्धि जो

सोडी इच्छा भय क्रोध सर्वदा सुटला चि तो ॥ ५ - २८ ॥

भोक्तारम् यज्ञतपसाम् सर्वलोकमहेश्वरम् ।

सुहृदम् सर्वभूतानाम् ज्ञात्वा माम् शान्तिम् ऋच्छति ॥ ५ - २९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
भोक्तारम्	Bhoktaaram	enjoyer	भोगनेवाला	भोक्ता (मी आहे)
यज्ञतपसाम्	Yadnya-Tapasaam	of sacrifices and austerities	सब यज्ञ और तपों का	सर्व यज्ञ आणि तप यांचा
सर्व-लोकमहेश्वरम्	Sarva-Loka-Maheshvaram	supreme Lord of all worlds	सम्पूर्ण लोकों के ईश्वरों का भी ईश्वर	सर्व लोकातील ईश्वरांचासुद्धा ईश्वर (मी आहे)
सुहृदम्	Suhrudam	friend	मित्र / सुहृद् (अर्थात् स्वार्थरहित दयालु और प्रेमी)	मित्र / सुहृद् (स्वार्थ रहित दयाळू व प्रेम करणारा)
सर्वभूतानाम्	Sarva-Bhootanam	of all beings	सम्पूर्ण भूत - प्राणियोंका	सर्व प्राणिमात्रांचा
ज्ञात्वा	Dnyaatvaa	having known	तत्त्व से जानकर	तत्त्वतः जाणून
माम्	Maam	Me	मुझ को	मला
शान्तिम्	Shaantim	peace	शान्ति को	सर्व संसाराच्या शांतीस
ऋच्छति	Rhuchchhati	attains	प्राप्त होता है	प्राप्त होतो

अन्वय :-

यज्ञतपसाम् भोक्तारम् सर्वभूतानाम् सुहृदम् सर्वलोकमहेश्वरम् माम् ज्ञात्वा शान्तिम् ऋच्छति ॥ ५ - २९ ॥

English translation:-

Having known Me as the enjoyer of sacrifices and austerities, the Supreme Lord of all worlds, the friend of all beings, he attains peace.

हिन्दी अनुवाद :-

मेरा भक्त मुझ को सब यज्ञ और तपों का भोगनेवाला, सम्पूर्ण लोकों के ईश्वरों का भी ईश्वर तथा सम्पूर्ण भूत - प्राणियों का सुहृद् अर्थात् स्वार्थरहित दयालु और प्रेमी यह तत्त्व से जानकर, शान्ति को प्राप्त होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

सर्व यज्ञ व तपे ह्यांचा भोक्ता, सर्व लोकांचा महान ईश्वर, सर्व प्राण्यांचा सखा मीच आहे असे जो मला जाणतो, त्या साधकालाच शांती प्राप्त होते.

विनोबांची गीताई :-

भोक्ता यज्ञ तपांचा मी सोयरा विश्व चालक
ज़ाणूनि ह्यापरी मातें शांतीस वरिला चि तो ॥ ५ - २९ ॥

ॐ तत् सत् इति श्रीमद् भगवद् गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायाम्

योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे संन्यासयोगो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥

हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् ।

Om that is real. Thus, in the Upanishad of the glorious Bhagwad Geeta, the knowledge of Brahman, the Supreme, the science of Yoga and the dialogue between Shri Krishna and Arjuna this is the fifth discourse designated as "the Yoga of Renunciation of Action".

पाचव्या अध्यायाचा एका श्लोकात मथितार्थ

करी सारीं कर्मे विहित निरहंकार असुनी ।

त्यजी प्रेमद्वेषा धरुनि समता जो निशिदिनीं ॥

जया चिंता नाही पुढिल अथवा मागिल मनीं ।

खरा तो संन्याशी स्थिरमतिहि संकल्प सुटुनी ॥ ५॥

गीता सुगीता कर्तव्या किम् अन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।

या स्वयम् पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता ॥

गीता सुगीता करण्याजोगी आहे म्हणजेच गीता उत्तम प्रकारे वाचून तिचा अर्थ आणि भाव अन्तःकरणात साठवणे हे कर्तव्य आहे. स्वतः पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णूंच्या मुखकमलातून गीता प्रगट झाली आहे. मग इतर शास्त्रांच्या फाफटपसाऱ्याची जरूरच काय ?

- श्री महर्षी व्यास

विनोबांची गीताई :-

गीताई माउली माझी तिचा मी बाळ नेणता ।

पडतां रडतां घेई उचलुनि कडेवरी ॥